ISBN : 978-93-82597-94-0

पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कविता : भारतीय संस्कृति के विविध आयाम

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी / 2–3 नवम्बर, 2017

हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं सम्पादक

रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य

सौजन्य : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

Scanned with CamScanner

(25)

भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ की अवधारणा

डॉ. डी. एस. मराठी
ठाकुर छेदीलाल शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जांजगीर

भारतीय दर्शन विचार प्रणाली न होकर एक जीवन दर्शन है जीवन पद्धति है। इसका लक्ष्य जीवन के दुखों को दूर करने का उपाय खोजना और मोक्ष प्राप्त कराना है। भारत में जीवन की प्रगति में सहायक होना ही दर्शन और धर्म को आपस में मिलाता है। इसीलिए दार्शनिकों ने मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया है जो पुरुषार्थ के नाम से प्रसिद्ध है।

पुरुषार्थ की अवधारणा भारतीय दर्शन की समाज को अमूल्य देन है। इसने व्यक्ति और समाज के बीच संबंधों को संतुलित करने में बड़ी भूमिका निभायी है। यह अपने लिए सब कुछ करने की प्रेरणा नहीं देता बल्कि त्यागमय जीवन व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित भी करता है। यहाँ व्यक्ति के विभिन्न कर्त्तव्यों का उल्लेख भी किया गया है। पुरुष में चार बातें पाई जाती हैं - शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा। इन सबसे मिलकर जो कुछ बनता है वही पुरुष कहलाता है। पुरुष के द्वारा इन सबकी संतुष्टि के लिए जो कुछ प्रयास किया जता है, उसे ही पुरुषार्थ कहते है।

पुरुषार्थ से आशय प्रयास करने से है। पुरुषार्थ की व्याख्या इस प्रकार की जाती है - "पुरुषैः अर्थ्यन्ते इति पुरुषार्थाः।" अर्थात् अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना ही पुरुषार्थ है। यहाँ लक्ष्य का अर्थ मोक्ष प्राप्ति से है। अतः मोक्ष ही जीवन का लक्ष्य है और इनकी प्राप्ति के लिए धर्म, अर्थ और काम साधन है। निरंतर प्रयास करते रहना और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ की इस धारणा में जीवन के विभिन्न कर्त्तव्यों का ज्ञान होता है। धर्म-ग्रंथों में चार कर्त्तव्यों के रूप में पुरुषार्थ का उल्लेख मिलता है जिन्हे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कहा गया है। इन चार पुरुषार्थों को प्राप्त करके ही मनुष्य जीवन मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है। इस तरह पुरुषार्थ से तात्पर्य जीवन के चार लक्ष्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्न करने से है।

चार्वाक दर्शन को छोड़कर सभी दर्शनों ने चार पुरुषार्थों को माना है। चार्वाक सिर्फ दो को ही अर्थ और काम - पुरुषार्थ स्वीकार किया है। इसने काम को जीवन का लक्ष्य और अर्थ को साधन माना है। पुरुषार्थ सिद्धांत के अनुसार चार पुरुषार्थ है जिनमें से प्रत्येक का यहाँ पृथक् से विवेचन किया जा रहा है।

धर्म

भारतीय दर्शन में धर्म को प्रथम किन्तु महत्वपूर्ण पुरुषार्थ माना गया है। यही मानव जीवन का आधार है। धर्म के कारण ही मनुष्य और पशु में भेद है। यह शब्द "धृ" धातु से व्युत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है धारण करना। धर्म वही है जिसे धारण किया जा सके, जिसे जीवन में उतारा जा सके या जिसके अनुसार आचरण किया जा सके। यहाँ पुरुषार्थ के रूप में इसके सामाजिक पक्ष पर विशेष बल दिया गया है। प्रत्येक आश्रम में व्यक्ति को धर्म के अनुरूप आचरण करने को कहा गया है। यह एक आचरण-नियम के रूप में व्यक्ति को सन्मार्ग पर ले जाता है। इस प्रकार धर्म व्यक्ति को कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने और अपने दायित्वों को निभाने की प्रेरणा देता है।

धर्म का तात्पर्य उन सभी कर्तव्यों के पालन से है जो व्यक्ति के साथ-साथ समाज की प्रगति में भी योगदेते है। धर्म एक ऐसा पुरुषार्थ है जो व्यक्ति को अधोगति से बचा कर उन्नति की ओर ले जाता है। अतः धर्म वह है जो सभी प्राणियों को एक करता है और उन सभी को धारण करता है। यहाँ धर्म के अंतर्गत सामान्य धर्म और स्वधर्म दोनों के पालन करना शामिल है। इस तरह स्वधर्म पालन तथा सदाचार संबंधी जीवन पद्धति का नाम ही धर्म है।

वस्तुतः धर्म का संबंध किसी विशेष ईश्वरीय सिद्धांत से नहीं है बल्कि यह तो आचरण संहिता है जो व्यक्तियों के आचरण को नियंत्रित करती है। जिस कार्य के करने से इस लोक में उन्नति और परलोक में कल्याण हो, वही धर्म है। इस प्रकार धर्म सबको धारण करता है, अधोगति में जाने से रोकता है और जीवन की रक्षा करता है। धर्म को एक पुरुषार्थ मानकर उसके अनुरूप आचरण करने की व्यक्ति से आशा की गयी है कि उसके लोक और परलोक दोनों उन्नत हो।

अर्थ

भारतीय दर्शन में 'अर्थ' को दूसरा पुरुषार्थ माना गया है क्योंकि सामाजिक जीवन में इसका बड़ा महत्व है। अर्थ का

Govt. TCL P.G. College Janjgir(C.G.)
Scanned with CamScanner

जीवन की गाड़ी चलती है। यही कारण है कि शास्त्रों में इसकी खूब महिमा गायी गयी है। विद्वानों ने तो यहाँ तक कह दिया है कि अर्थहीन मनुष्य शव के समान है। गृहस्थ आश्रम का तो यह एकमात्र आश्रय है।

अर्थ का तात्पर्य केवल धन या संपत्ति से नहीं बल्कि उन साधनों से है जिनसे सभी प्रयोजनों की सिद्धि होती है। नीति वाक्यामृत में कहा गया है कि - मनुष्यों के इस लोक और परलोक के सभी कार्य संपादित होते है। उसे अर्थ कहते है। अर्थ को सभी चाहते है इसलिए इसका नाम भी सार्थक है। मनुष्य की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति चल-अचल संपत्ति द्वारा होती हैं धन के बिना मनुष्य का अस्तित्व सुरक्षित नही रह पाता। इसीलिए चाणक्य ने कहा है - अर्थ जीवन का प्रवर्तक है। धन के अभाव में मनुष्य आर्थिक कार्यो का संपादन नहीं कर सकता और धार्मिक कार्यों को भी नहीं कर सकता। इसके बिना व्यक्ति परिवार के लिए न तो सुख-सुविधाएँ जुटा सकता है और न ही ठीक से अपने बच्चों का पालन पोषण कर सकता। यही कारण है कि परिश्रम द्वारा धन अर्जित करने पर बल दिया गया है।

धन से ही मनुष्य को गौरव प्राप्त होता है। इसीलिए कहा गया है - जिसके पास धन है वही कुलीन, पंडित, गुणी, यशस्वी एवं वक्ता माना जाता है क्योंकि सभी गुण धन में ही आश्रित है। जिसके पास धन नहीं है उसका जीवन मृतक के समान होता है। शुकनीति में कहा गया है कि निर्धन मनुष्य चाहे कितना भी गुणवान क्यो न हो वह अपने परिवार वालों से आदर नहीं प्राप्त कर सकता। दरिद्रता को एक अभिशाप माना गया है जो मृत्यु से बढ़कर है। धन के अभाव प्रत्येक बुराई का मूल है। भारतीय जीवन दर्शन में भौतिक समृद्धि को एकलक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार जीवन में अर्थ का काफी महत्त्व है।

यह सत्य है कि अर्थ का जीवन में पर्याप्त महत्व है किन्तु भारतीय दर्शन के अनुसार मनुष्य को उचित साधनों से धन कमाना चाहिए। ईमानदारी से कमाया हुआ धन ही व्यक्ति के सुख और संतोष में वृद्धि करता है। इसका उपभोग भी ऐसे करना चाहिए जिससे किसी को कष्ट न हो और घृणित कार्यो को बढ़ावा भी न मिले।

काम

भारतीय दर्शन में जहाँ अर्थ को एक पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया तो दूसरी ओर काम को जीवन का लक्ष्य माना है। काम के अभाव में न तो किसी प्रकार की प्रवृत्ति पाई जाती है और न लोक व्यवहार बनते हैं। इसीलिए काम की विद्वानों ने बड़ी प्रशंसा की है। गीता में भगवान ने स्वयं को धर्म युक्त काम का स्वरूप कहा है।

काम का तात्पर्य केवल भोग-वासना से ही नहीं बल्कि सभी प्रकार की इच्छाओं या कामनाओं से है। काम का व्युत्पत्तिगत अर्थ है - जो लोग जिन-जिन वस्तुओं की इच्छा करते है उनका नाम काम है। 'काम' शब्द का प्रयोग दो अर्थो में किया गया है, संकुचित अर्थ में तथा विस्तृत अर्थ में। संकुचित अर्थ में इन्द्रिय सुख या यौन इच्छाओं की पूर्ति को 'काम' कहते है। व्यापक अर्थ में मनुष्य की समस्त प्रवृत्तियों, इच्छाओं, भावनाओं एवं कामनाओं की संतुष्टि का नाम 'काम' है। इस प्रकार व्यक्ति जो कुछ भी चाहता है या चाहने की जो कुछ इच्छा उसके अंदर है वहीं काम है।

काम व्यापक अर्थ में मनुष्य की ऐन्द्रिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम है। इससे ज्ञात होता है कि एक पुरुषार्थ के रूप में काम सिर्फ यौन तृप्ति ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से आनन्द का उपभोग भी है। संक्षेप में, एक ओर यह इन्द्रिय सुख को व्यक्त करता है तो दूसरी तरफ मानव की भावुक और साहित्यिक संगीत और कलात्मक प्रवृत्तियों को प्रस्फुटित होने का अवसर प्रदान करता है।

मोक्ष

भारतीय चिंतन के अनुसार चौथा पुरुषार्थ मोक्ष है। मोक्ष मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है। इसे परम पुरुषार्थ के नाम से भी जाना जाता है। चार्वाक को छोड़कर सभी भारतीय दर्शन इसे अंतिम पुरुषार्थ मानते हैं। भले ही इसका भिन्न-भिन्न अर्थ है। किन्तु सभी स्वीकार करते हैं कि मोक्ष की प्राप्ति से जीवन के दुखों का नाश होता है। आवागमन के चक्र से मुक्त होना ही मोक्ष है।

बौद्ध दर्शन में मोक्ष के लिए निर्वाण शब्द और जैन दर्शन तथा सांख्य योग में "कैवल्य शब्द" का प्रयोग हुआ है। न्याय दर्शन में इसे दुख की आत्यान्तिक निवृत्ति कहा है तो वेदांत में जीव और ब्रह्म की एकता का अनुभव। अधिकांश भारतीय दर्शनों के अनुसार मोक्ष से न केवल दुख का ना'1 होता है बल्कि आनन्द का अनुभव भी होता है। वेदांत, जैन, बौद्ध इत्यादि ऐसा ही मानते है। जो मोक्ष प्राप्त कर लेता है, वह अमर हो जाता है।

मोक्ष प्राप्ति के लिए मुख्य साधन आत्म ज्ञान है। ज्ञान के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। ज्ञान से ही मनुष्य के दुख का ना'1 और मुक्ति लाभ होता है। भक्ति मार्ग को भी मुक्ति का एक प्रमुख साधन माना गया है, साथ ही नि'काम कर्मयोग को भी। इसके अतिरिक्त जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योग की बड़ी आवश्यकता है। क्योंकि जब तक व्यक्ति का हृदय निर्मल और स्थिर नही होता तब तक उसे सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। यही कारण है कि सभी भारतीय दर्शन अपने-अपने सिद्धांतों का यौगिक रीति से प्रतिपादन करते हैं।

भारतीय दर्शन में दो प्रकार के मोक्ष स्वीकार किया गया है - जीवनमुक्ति और विदेह मुक्ति।

पुरुषार्थ का सिद्धांत भारतीय दार्शनिकों की समाज को एक अनुपम देन है। यह उनके शताब्दियों के गहन चिंतन का फल है। भले ही चार्वाक जैसे दार्शनिकों ने सिर्फ अर्थ और काम को ही स्वीकार किया। यह उनकी सतही सोच का परिणाम है। हमारे चिन्तकों ने अर्थ और काम को कभी भी घृणित नहीं माना। जीवन में काम का संयम उतना ही आवश्यक है। जितना कि जीवन

Govt. TCL P.G. College Janjgir (C.G.)

Scanned with CamScanner

Bhuneshwari Survanshi

ISSN : 0975-36

Year : 2018

ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43666
UGC No. : 41386

शोध - धारा

SHODH DHARA

(peer reviewed Quarterly Research Journal of Humanities & Social Sciences with **Grade 'A'** & **Impact Factor 5-10**)

Year : 2018 **Month : JUNE** **Vol. 2**

Chief Editor

Dr. (Smt.) Neelam Mukesh

Editor

Dr. Rajesh Chandra Pandey

49

बिलासपुर संगोष्ठी विशेषांक

Guest Editor

Dr. (Smt.) Rajesh Chaturvedi

Guest Co-Editor

Dr. Kiran Thakur

Govt. TCL P.G. College ★ Janjgir(C.G.) ★

Published by : Shakshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

१६. भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में प्रेस की भूमिका	अतुल कुमार मिश्र	78-82
२०. अरविंद अडिगा के उपन्यास 'द व्हाईट टाईगर' में राष्ट्र विकास का चिंतन	डॉ० सावित्री त्रिपाठी	83-88
२१. राष्ट्र निर्माण में संस्कृत की भूमिका	श्रीमती उत्तरा निराला श्री रामकुमार सिंह कंवर	89-92
२२. पूर्व मध्ययुगीन हिन्दी–साहित्य और राष्ट्रीय एकता	डॉ० (श्रीमती) उषा तिवारी डॉ० आर.के. तिवारी	93-96
राष्ट्र के विकास में हिन्दी भाषा की भूमिका	डॉ० सतेन्द्र कुमार कश्यप श्री अनिल कुमार नेताम	97-99
राष्ट्र के निर्माण में भाषा का योगदान	डॉ. रेशमा अंसारी डॉ. कमलेश गोगिया	100-102
राष्ट्र विकास में छायावादी कवियों का योगदान (महात्मा गांधी के संदर्भ में)	श्रीमती भारती धुमाल	103-105
राष्ट्रभाषा की अवधारणा एवं हिन्दी	डॉ० मधुमति सरोटे	106-108
राष्ट्र विकास में कवियों का योगदान	डॉ० (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी	109-111
हिन्दी कविता में जनवादी चेतना	डॉ. (श्रीमती) जयश्री शुक्ल	112-114
राष्ट्र विकास में साहित्य चिंतन	श्रीमती श्वेता शर्मा	115-118
राष्ट्र विकास और साहित्य चिंतन (भारतेन्दु युग के विशेष सन्दर्भ में)	लक्ष्मी प्रसाद कर्ष	119-124
राष्ट्रीय चेतना का संवाहक : साहित्य	डॉ० शशि अवस्थी	125-127
राष्ट्र विकास और साहित्य चिंतन	डॉ. अलका पंत	128-131
राष्ट्र विकास और भारतीय राजनीतिक चिंतन (कौटिल्य के विशेष संदर्भ में)	असीम बाजपेयी	132-135
राष्ट्रविकासः राजनीति एवं प्रबंधन की दृष्टि से	डॉ० गोमती सिंह	136-140
राष्ट्र विकास और राजनीतिक चिंतन	ईश्वरी बृजबासी सूर्यवंशी	141-143
राष्ट्र विकास और राजनीतिक चिंतन	डॉ० आभा तिवारी डॉ० एम.एस. तंबोली	144-147
राष्ट्र के विकास में राजनीतिक और वैज्ञानिक चिंतन का स्वरूप	श्रीमती अर्चना दीवान डॉ. (श्रीमती) कविता ठक्कर	148-150
राष्ट्र विकास में वैज्ञानिक चिंतन	अली हसन	151-152
विकास, पर्यावरण एवं पर्यावरण संरक्षण कानून	डॉ० राम आशीष श्रीवास्तव	153-159
राष्ट्र निर्माण में सतत् विकास तथा पर्यावरण संरक्षण संवर्धन	श्रीमती सीमा जायसी डॉ० रवीन्द्र जायसी	160-167
विकास का पर्यावरणीय चिंतन	डॉ० कावेरी दाभड़कर	168-172
राष्ट्रवाद	डॉ० के.आर. मतावले	173-176
नारी की भूमिका	श्रीमती करुणा गायकवाड़	177-180
विकास में स्व सहायता समूहों के संघों की भूमिका	डॉ० सजाता रामअवतार डॉ० सपना कॉर	[illegible]
	डॉ० बबीता मिर्झा	185-188
राष्ट्र विकास में महिला की भूमिका	डॉ० अविनाश कुमार लाल	189-191
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	श्रीमती अविन्दना जॉन सुश्री साधना राजपूत	
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ० बालकराम चौकसे	192-195
राष्ट्र निर्माण और विकास में बस्तर जिले की महिलाओं का योगदान	सियालाल नाग डॉ श्रीमती लक्ष्मी लेकाम	196-200
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ० (श्रीमती) सुनीला एक्का	201-202
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ० हीरालाल शर्मा डॉ० ईशाबेला लकड़ा	203-206
शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान प्रगति के बारे में प्रतिभागियों के ज्ञान के अद्यतन का अध्ययन करना	रीता सिंह	207-209
राष्ट्र विकास में नारी का योगदान	डॉ० शशि गुप्ता	210-212
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ० सुजाता शुक्ल डॉ० सपना कॉर	213-215
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	विवेक सिंह	216-217
नारी शिक्षा और राष्ट्र का विकास	अनिल कुमार सिंह	218-220
राष्ट्र–विकास में नारी की भूमिका	श्रीमती मनीषा चन्द्रा	221-223
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	कु० प्रियंका यादव अखिलेश कुमार साहू	224-226
लोकतांत्रिक सहभागिता, सामाजिक परिवर्तन एवं महिला सशक्तीकरण	कादम्बरी वैष्णव	227-231
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	अर्चना वी.	232-236
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ. (श्रीमती) लक्ष्मी बृजबासी	237-239
भारत राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण	डॉ. घनश्याम दुबे अभिषेक अग्रवाल	240-248
राष्ट्र विकास में नारी की भूमिका	डॉ. दुर्गा वाजपेयी डॉ. शारदा दुबे	249-251
राष्ट्र विकास का आधार स्तम्भ 'नारी'	ज्योति कुशवाह	252-254
राष्ट्रीय विकास के निर्णायक तत्व	डॉ. सी.बी. खूंटे श्री जी.एन. भतपरे	255-258
आधुनिक भारत में सामाजिक समस्याओं के समाधान में [illegible]	संत कुमार	[illegible]
[illegible]	डॉ. संतोष कुमार [illegible]	[illegible]

Govt. C.L.C. College, Janjgir (C.G.)

ISSN : 0975-3664, RNI : UPBIL/2012/1886 UGC No. : 41486
SHODH DHARA , JUN 2018, Vol 2, P 141-143

राष्ट्र विकास और राजनीतिक चिंतन

ईश्वरी पुजारी सूर्यवंशी

[illegible] शासकीय महाविद्यालय जांजगीर, चांपा, छत्तीसगढ़

[illegible]

Abstract

[illegible] मनु, कौटिल्य, राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती [illegible] इन्होंने राज्य के स्वरूप, संगठन, कार्य व विभिन्न पहलुओं पर पर्याप्त सोचा [illegible] प्लेटो, अरस्तू, मैकियावेली, टॉमस हॉब्स, जॉन लॉक, जीन जैक्स रूसो [illegible] आदि थे। आधुनिक काल जिसमें 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से वर्तमान [illegible] सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन का काल कहलाता है। आधुनिक [illegible] दोनों के विकास का अर्थ है आधुनिक युग का आरंभ। पुनर्जागरण [illegible] वैज्ञानिक और धार्मिक क्रांति ने मध्ययुगीन सभ्यता का विकास किया। राष्ट्र [illegible] चिंतकों ने अहम भूमिका निभायी, जिसमें प्रमुख योगदान मनु, कौटिल्य आदि [illegible] राजनीतिक चिंतन में प्लेटो, मैकियावेली की रचना "दि प्रिंस" [illegible] आधुनिक युग [illegible] पुनर्जागरण युग की शुरुआत उनके विचारों से हुई थी। हॉब्स, लॉक, रूसो [illegible] वैज्ञानिक विश्लेषण दिया। लॉक, जे.एस. मिल आदि चिंतकों ने भारत के सामाजिक [illegible] विभिन्न पक्षों पर चिंतन किया तथा भारत को विकास की ओर ले गये।

Figure : 00 References : 04 Table : 00

Key Words- : राष्ट्र चिंतन में राजनीति की भूमिका, आधुनिक राजनीतिक चिंतन और राष्ट्र विकास

भूमिका

[illegible] विकास के बारे में अध्ययन करते हैं तो यह साक्ष्य सामने आता है कि [illegible] आधुनिक राजनीतिक चिंतकों का प्रभाव पाया जाता है [illegible] राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती, दादाभाई नौरोजी [illegible] लाला लाजपत राय, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी [illegible]

[illegible] कार्य व विभिन्न पहलुओं पर पर्याप्त सोचा था। किन्तु [illegible] चिंतन से अधिक प्रभावित रही। भारत में अंग्रेजी शासन की [illegible] प्रभाव ने कई नवीन पाश्चात्य व राजनीतिक विचारों को [illegible] जिसमें प्लेटो, अरस्तू, मैकियावेली, टॉमस हॉब्स, जॉन [illegible] हीगल, ग्रीन, मार्क्स, लास्की आदि थे। [illegible] शताब्दी के उत्तरार्द्ध से वर्तमान तक का काल आता है [illegible] का काल कहलाता है। [illegible] की मानसिक स्थिति [illegible]

Govt. T.C.L. P.G. College Janjgir (C.G.)

Scanned with CamScanner

आधुनिक राजनीतिक चिंतन का प्रारंभ :- राष्ट्रवाद, पूँजीवाद औद्योगिक क्रांति, व्यापारिक क्रांति, पुनर्जागरण, धर्म सुधार आदि आधुनिक सभ्यता की विशेष देन है। राष्ट्रवाद और पूँजीवाद दोनों के विकास का अर्थ है आधुनिक युग का आरंभ। पुनर्जागरण तथा सुधार आन्दोलन की बौद्धिक, वैज्ञानिक ... धार्मिक क्रांति ने मध्ययुगीन सभ्यता के आधार को ध्वस्त कर दिया। व्यापारिक क्रांति ने पूँजीवाद को जन्म देकर मध्ययुगीन सामाजिक आर्थिक ढांचा अस्त–व्यस्त कर दिया। आर्थिक क्रांति ने ही ... राजनीतिक क्रांति को सम्भव बनाया।

धर्मसुधार आंदोलन व फ्रेंच राज्य क्रांति तथा सामन्तवादी व्यवस्था के अन्त और राष्ट्रीय ... के जन्म और विकास के साथ ही आधुनिक चिन्तन का प्रारंभ हुआ–आधुनिक राजनीतिक चिन्तन ... निकोलो मेकियावली प्रथम है। आधुनिक आर्थिक राजनीतिक चिन्तन के विकास में ... (१७२३–१७९०) की पुस्तक "दि वेल्थ आफ नेशन्स प्रमुख" थी।

राष्ट्र विकास में भारतीय राजनीतिक चिंतन की भूमिका :- मनु ने अराजकता का अंत कर शासन ... स्थापना पर बल दिया। कौटिल्य को कूटनीति, शासन कला का सबसे बडा प्रतिपादक माना जाता है। भारत में एक संगठित राज्य स्थापित करने का श्रेय कौटिल्य को है। स्वामी दयानंद सरस्वती एक समाज सुधारक थे, जिन्होने भारतीय समाज की कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया, स्वामी विवेकानंद ... भारतीय युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं। बाल और लाल इनके विचारों में आवेग था, राष्ट्रवाद के प्रेरक ... राष्ट्रीय जागरण व राजनीतिक स्वतंत्रता को समर्थक थे। स्वदेश प्रेम व विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार ... इनका अतुल्य योगदान रहा है। लाला राजपतराय देश भक्ति के प्रतीक, राष्ट्रवाद के चिंतक और ... के मसीहा थे, उन्होने भारतीय स्वाधीनता की नींव रखी अपने प्रांण निछावर कर। लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय आंदोलन व पुनर्जागरण में चिरस्थायी रहे। उन्होने भारतीय संस्कृति का विकास किया व लोगों में एकता की भावना जागृत किया गणेशोत्सव के माध्यम से।

नेताजी ने भारत की स्वतंत्रता हेतु आजाद हिंद फौज का गठन किया। वे स्वतंत्रता समाज के विचारो को लोकप्रिय बनाने की दृष्टि से विशिष्ट व्यक्ति थे।

गाधी जी ने धर्म निरपेक्ष समाज, निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा, कुटीर उद्योगों का समर्थन, औद्योगिकीकरण का विरोध, स्त्री सुधार के साथ ही वे अहिंसावादी थे। उन्होने अहिंसा द्वारा गुलाम भारत को आजाद कराया। वे भारत में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे।नीति निर्देशक तत्व में राम राज्य की झलक दिखाई देती है।

अम्बेडकर का जीवन भारत में सामाजिक सुधार को समर्पित था। उन्होने जातिवाद, अस्पृश्यता निवारण के लिये जीवन भर कार्य किया। संविधान सभा में उनकी भूमिका प्रशंसनीय रही। उन्होने भारत के संविधान का निर्माण किया। लोकसभा में हिन्दू कोड बिल पर उनके विचारों ने दलित के साथ–साथ भारतीय महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने वाले मसीहा के रूप में स्थापित किया।

पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन का विकास क्रम :- प्राचीन युग का कालक्रम ३०० ई.पू. तक माना है। यह युग सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, आदि यूनानी विचारकों का युग है, जिनके चिन्तन का केन्द्र नगर राज्य थे। आदर्श नगर राज्य की स्थापना इनके चिन्तन का मुख्य उद्देश्य था।

मध्य युग का काल क्रम ३०० ई.पू. से १५०० शताब्दी ई. तक विस्तृत है। चौथी शताब्दी ई. सिकन्दर द्वारा नगर राज्यों का विनाश कर उनके स्थान पर विश्व साम्राज्य की स्थापना की गयी

Govt. TCL P.G. College Janjgir (C.G.)
Scanned with CamScanner

घटना ने राजनीतिक विचारों में भी क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया। अब विश्वव्यापी ... की प्रवृति ने जन्म लिया। इस युग में सिकन्दर आदि रोमन सम्राटों का प्रभुत्व रहा। फलतः ... राजनीतिक चिन्तन पर चर्च, राज्य सत्ता संघर्ष का गहरा प्रभाव पडा।

आधुनिक युग का कालक्रम १५०० ई. से वर्तमान समय तक है। इस युग का प्रारंभ १६ वीं शताब्दी ... पुनर्स्थापना तथा धर्म सुधार आंदोलन से हुआ। इस युग में राजनीतिक चिंतन का मुख्य विषय ... सार्वभौमिक के स्थान पर 'राष्ट्र राज्य' हो गया। राष्ट्रीयता का उत्थान इस युग की मुख्य ... है, जिसने राष्ट्रवाद को जन्म दिया। जो अब आधुनिक स्थितियों से प्रभावित होकर शनैः शनैः ...–राष्ट्रवाद में परिवर्तित होता जा रहा है।

... विकास में पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन की भूमिका :- प्लेटो ने आदर्श राज्य की कल्पना, बुद्धि का ... स्त्री पुरूष समानता आदि न्याय सिद्धांत दिये। वह यूनान ही नहीं अपितु संपूर्ण पश्चिमी राज्य ... विद्वान थे। अरस्तू राजनीति विज्ञान के जनक हैं। उन्होने यथार्थवाद को अपना कर आगमनात्मक ... का अनुसरण किया। संविधान का वर्गीकरण, राज्य सिद्धांत का क्रमबद्ध निरूपण किया। उन्होंने ... सर्वप्रथम यह बताया की मनुष्य एक राजनीतिक व सामाजिक प्रांणी है।

मैकियावेली की रचना 'दि प्रिन्स' उसकी महानतम् कृति थी। उन्हे आधुनिक युग का शिशु कहा ... है। पुनर्जागरण युग की शुरूआत उनके विचारों से हुई थी। उन्होंने राष्ट्रीय राज्य की स्थापना की। ... लॉक, रूसो ने राज्य के जन्म का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक विश्लेषण दिया। लॉक ने व्यक्ति के ... सम्पति व स्वतंत्रता के अधिकारों की बात की; तो रूसो सबसे पहला आधुनिक विचारक था जिसने ... समता, स्वतंत्रता, आदि जनतंत्र के विचारों का उदघोष किया। जे.एस. मिल ने व्यक्ति की स्वतंत्रता ... बेन्थम ने राज्य के कार्यो से अधिकतम व्यक्ति के सुख की बात कही और लोक कल्याणकारी राज्य ... बात कही। ग्रीन ने व्यक्ति को, राज्यों के कार्यो का विरोध करने का अधिकार दिए जाने की बात ... व प्राचीन समय में राजा की आज्ञा का विरोध करने का अधिकार जनता को नहीं था, लोकतंत्र की ... के लिए यह आवश्यक अधिकार था, जिसकी वकालत ग्रीन ने की। कार्लमार्क्स ने पूंजीवादी ... का विरोध कर मजदूरों को शोषण से मुक्त कराने हेतु व उनके कल्याण के लिये कानून बनवाए। ... कानून अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर बनाया गया,

निष्कर्ष :- राजनीति चिंतन कि उत्पत्ति कब और कैसे हुई यह स्पष्ट नहीं किया जा सकता, परंतु ...राष्ट्रीय स्तर पर सुकरात, प्लेटो, अरस्तू ने गुरू शिष्य परंपरा को बढाया व इनके विचारों से पाश्चात्य ... नहीं अपितु पूरे विश्व में इनके विचारों से वैज्ञानिक सोच व नये दृष्टिकोण का सूत्रपात हुआ। भारतीय ...नीतिक चिंतकों ने भारत के समाजिक,राजनीतिक, आर्थिक व विभिन्न पक्षों पर चिंतन किया तथा ... को विकास की ओर ले गये। उनके विचारों से भारत में फैली कुरीतियाँ दूर हुई, भारत को आजादी ... हुई। आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की एक अमिट पहचान है। यहाँ की संस्कृति, अध्यात्म, योग, ... को विश्व पटल पर अलग पहचान दिलाते हैं।

संदर्भ

मेहता, जीवन; राजनीतिक चिन्तन का इतिहास, साहित्य भवन पब्लिशर्स आगरा
...डिया, बी.एल.; आधुनिक राजनीतिक चिन्तन का इतिहास, साहित्य भवन आगरा
...डिया, बी.एल.; राजनीतिक चिन्तन भारतीय एवं पाश्चात, साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा
...ठक, पी.डी.; राजनीतिक चिन्तन भारतीय एवं पाश्चात्य, उपयोगी प्रकाशन ग्वालियर।

Govt. T.C.L. P.G. College Janjgir (C.G.)

Scanned with CamScanner

ISSN 2349 - [illegible]

MATS UNIVERSITY

MATS JOURNAL OF ARTS AND EDUCATION

Volume - 5, Issue-1

December 2018

Govt. TCL P.G. College
Janjgir (C.G.)

Scanned with CamScanner

ISSN 2349-

Contents

Page No.

1. **Impulses and Rationality- A Comparitive Analysis of Karnad's *Hayavadana* and Dattani's *Thirty Days in September***
Alka Jain 1-7

2. **A Thematic Analysis of the Nuanced Construction of India-A Study of the Evaluation of Gita Mehta's Works**
Bhagatram Seth, Dr.Mahima Gautam 8-13

3. **The Unconventional View of Pantheism and Mythology- A study of the Ancient Belief during Mughal Times**
Rajkumar Baghel 14-20

4. **Hindu Mythology in Jayanta Mahapatra's *A Rain of Rites***
Manabodh Luhura 21-23

5. **The Aesthetics of Gratitude: Rhonda Byrne's *The Magic***
Megha Singh 24-26

6. **Reconstructing Womanhood From Tragedy to Triumph in the Novel *The Color Purple***
Neha Tiwari 27-32

7. **Post Colonialism in Jean Rhys, '*Wide Sargasso Sea*'**
Pranshu Poptani 33-36

8. **Multiculturalism in Christos Tsiolkas writing – '*The Slap*'**
Rekha Pincha, Dr.Mahima Gautam 37-39

9. **Tribal Culture of Chhattisgarh : A Study**
Sahil Gupta 40-42

10. **A Comparative Study on the art forms of Chhattisgarh and Africa**
Ms. Vidushi Malhotra 43-45

11. **A Comparative Study of Two Women Crusaders – Malala and Kamala**
Shivani Pundlik 46-47

12. **Art Forms Of Chhattisgarh**
Chitra Pandey, Dr. Shaista Ansari 48-50

13. **Comparative Analysis of Diaspora in '*Interpreter of Maladies*' and '*The Namesake*'**
Samhita Singh 51-53

14. **Comparative Study Of Kashmir's Life Through *Autumn Leaves* and *Our Moon Has Blood Clots*, Analysis Through Sapiens**
Yogita Upadhyay 54-57

15. **Tragic Vision in Eugene O Neill's *The Emperor Jones*: A Study**
Dr.Mahima Gautam 58-60

16. ***Against All Odds*: A Testimony of Kolhati Women's Plight**
Dr. M.R. Banjare 61-64

Govt. TCL P.G. College Janjgir(C.G.)

Scanned with CamScanner

... of Arts & Humanities, MJAE Journal
...-2018, Vol 5, Issue 1
ISSN 2349 -171X

Against All Odds: A Testimony of Kolhati Women's Plight

Dr. M.R. Banjare, Head, Department of English, T. C. L. Govt. P. G. College Janjgir (C.G.)

...Shantabai Kale through his autobiography, ...the Por' (Marathi, 1994, latter translated ...sh as 'Against All Odds' 2000, by ...Pandey) exposes the unequal, oppressive ... economic structures in Maharashtra, ... in the Kolhati community which ...its women-folk. He pinpoints the harsh ...chological and monetary tensions and ...ations of Kolhati women. It also throws ... humiliation, exploitation, sexual abuse, ... deprivation, and torture of dancers and ...dren in this unjust set-up. Kolhati ... had migrated from Rajsthan to Western .... In Rajsthan, the Kolhatis were ...acrobats and jugglers, but poverty drove ...dancing. They developed a distinct style of ... song called 'Lavni'. The music has more ... melody and the songs are loud and full ...entendre. The dance itself was designed to ... attention and it was easy to understand ... called tamasha.

...eran actor Sulochana, who played a ...dancer in the 1959 film Sangte Aika says: ... was originally a form of traditional .... However, it has degenerated over ... into a loud and vulgar performance. ... more disturbing is that young girls ... the highest bidder to provide for the ...

... way a Kolhati community survives ... money earned by the women of their ... The men do nothing as they consider ... below their dignity. Ironically they ... their wives to step on the ... of the dancing stage. The women ... any part of their earnings.

...Shantabai Kale's, 'Against All ... the predicaments of the tamasha dancers ... community in Maharashtra. The book is a ... on Feminist Movement and questions ...enticity of the aims of the movement. ... makes man the sole possessor of woman. However, Kale's community gives one right to the females; the child bears the name of his/her mother and not that of the father. But this should not be seen as the victory of Feminism – their mother's name is something to be ashamed of: '...most Kolhati children bear their mother's name, a fact that proclaims their illegitimacy' (p. ix). Earlier we had cases of female foeticide, the cases of 'missing girls'. The girl child was 'unwanted'. But among Kolhatis, the birth of a daughter was celebrated as more daughters meant more income. The males live off on the money that their women earned by dancing in front of the 'Satans': 'the men considered any labour below their dignity'. (p. 5)

Instead of protecting their daughters and sisters from the male-gaze, the Kolhati men themselves gave away their women to the highest bidder for chira utarna, a ceremony where young virgins were given to men 'with all the trappings of a wedding, but none of its sanctity' (p. 5). This kind of degeneration where a father whores his daughter is incredible and unacceptable. Kale's grandfather Kondiba ajoba handed over his young daughter 'Baby Maushi', who was on the threshold of her youth to Shivajirao Henge, a forty year old drunkard so that she would make his (Kondiba's) life easy – 'what a travesty it was of the father-daughter relationship' (p. 63). And when she bore a daughter, Shivajirao stopped visiting her completely. Kishore's mother Shantabai had already been become the victim of the same incident, as she had been pulled out of school and handed over to Namdeorao Jagtap, to bring money for her father.

Such was the pitiable condition of these women that the life of 'imprisonment' was a kind of security to them: 'They are like birds in a cage who have forgotten how life outside the cage is like. They cannot survive outside because their fear kills them' (p. 191). They are even not allowed to select life partner of their choice. Baby Maushi's friend Nili, who was badly in love with Mukesh, expresses her helplessness in a letter to him, 'We are dancing girls.

Govt. TCL P.G. College Janjgir(C.G.)
Scanned with CamScanner

We belong to everybody. We have no right to fall in love with any one man. If we do, then we must kill that love, otherwise our society won't let us live.' (p.57)

Kishore regrets on the pathetic condition of the women of his community. He writes:

"In the movies I had seen that brothers and fathers rushed to protect their sisters and daughters when anyone even passed a comment or whistled when they walked past. But a tamasha dancer's brothers and fathers went out of their way to attract the attention of men to their sisters and daughters, so that they themselves could live in an indolent life. What kind of relationship was this, I wondered? And why, why did no body oppose it." (p. 64)

The hypocrite society allowed the male to taste 'fresh flesh every night', the woman was always expected to be loyal to her man:

"As long as he maintained her and her family, she would not have sex with any other man. He was her 'kaja' or 'yejman', her master." (p. 15)

Kishore narrates an incident which indicates how the young girls have been made victims in the hand of very old men. The story is that one day he found a man about sixty years old caressing lovingly a seventeen year girl, Rukmani. When Kishore asked Baby Maushi whether the old man was Rukmani's father; she replied angrily, 'he's not her father; he's her "chira malik". (p. 58)

What an irony – women who are selling away their flesh daily to make the two ends meet, do not have any time either for their children or for themselves: 'Tears are all that tamasha dancers have in their lives anyway' (p. 161). When the tamasha dancers bore children and got aged they were left poor and helpless by their respective yejmans. Left by their yejmans, Kishore's Susheela maushi and Baby maushi were forced to go back to tamasha. When Kishore visited to them at Islampur he found their condition worse than himself. The sufferings and pains of tamasha dancers were well expressed in the words of Susheela maushi. 'Bai did the right thing Kishore,' said Susheela maushi, sadly. 'Atleast she is not as helpless as we are... Otherwise, she would have been in the same state as Jiji. Our lives have been spent looking after our f brothers; we have nothing, just nothing of (p.162) Thus, 'happiness plays a very, v part in a dancer's life'. (p.173) Finally, wit of Kishore; Susheela maushi and Bab followed the way of Shantabai and she their respective yejmans.

In the guise of an autobiograph Shantabai Kale narrates the sad tale women and their children who are left to they survive, their life is no better than 'who can be kicked by any pass remembers an incident of his childh according to Kishore, gave him his first the miserable lives of tamasha dancers. F

"Suman was a dancer from t community. One day, she had her ma ghunghroos on and was breast feedin baby when the bell rang announcing the show. She quickly took babe off and laid him on the floor beside me. him while I'm away, Kishore, sh rushed away.'" (p. 57) Kishore put his lap and tried to calm him. His with tears as he realized that it had him too when he was a baby.

Though, Kishore yearned fo love throughout his life; it also dilemma, the pain of a woman who crossroads – to choose between th miserable life and the husband or 'ka for support. His mother's decision latter was unforgivable by Kishore a family – the family lost the breadwi his mother; but what about the won He says in the beginning, 'My mo free herself of the binding ghungr little broken bell, was dropped, left (p. 2). But can anyone fathom the p mother? Shantabai 'pinned for remained duty bound to her husban

'Against All Odds' also blurring away of the fine line prostitution. People of Kolhati nomadic who used to earn performing tamashas before the

Govt. TCL P.G. College Janjgir(C.G.)

Scanned with CamScanner

ISSN 2349 -171X

played dholaks and women danced on the rhythm. However, slowly this degraded from an art into business, and eventually there was no difference left between a dancer and a prostitute. The latter at least has the satisfaction of carrying out her trade overtly but the Kolhati 'dancers' had to put on the façade of respectability by cladding in 'elaborate saris, which covered them completely and were pinned securely in place so that the pallu never slid off the shoulder on stage' (p. 11). They dance to attract men but are fully dressed, although physically only. It is just pretence for any spectator could hold and squeeze their hands, pass lewd remarks and even take her as his mistress.

This was a complete money game and to fulfill their sexual desire men went to Kolhati's and with the power of money they exploit and harass Kolhati women. Fulfilling their physical needs rich men abandoned Kolhati women. Namdeorao Jagtap was a politician and on the basis of his wealth forced Shanta's father to shower on him Shanta's virginity. And he abandoned Shanta after conception. Shantabai gave birth to Kishore- who was called an illegitimate and a mixed Child. Because of this identity, he was abused, oppressed, exploited, humiliated and maltreated. After abandoned by Jagtap, Shantabai was forced to join 'tamsha' for the sake of her family. There she came in contact with Krushnarao Wadkar, a moneylender from Parbhani. She married Krushnarao Wadkar and went with her to Parbhani leaving Kishore behind to his grandfather Kondia and his aunt Jiji because of Wadkar's refusal. Her Marriage also could not put an end to her sufferings rather it worsened. Wadkar was a money lender and has bad habits of going to tamasha and gambling. He lost all his wealth in it. In frustration, he usually beats Shanta and harasses her physically and psychologically.

Like Shantabai, Jiji, Baby and Susheela have undergone through the exploitation and manipulation of the male dominated society. Jiji was very badly treated by her father, Kondiba. Jiji had 25 acres of land in her name. She worked in farm but her father always snatched all the earnings from the farm without giving a single rupee to Jiji. Jiji was paralyzed and all the family members left her alone in the farmhouse to die. When Kishore came to take her to hospital, his grandfather did not allow him to take her, instead he asked for money to Kishore. This is very pitiable and regretable treatment given to a woman in Kolhati community. All the family members were living on her earnings and in her difficult days when she was in need of their help they turned their faces and left her like an orphaned on her own. This is the tragedy of Kolhati women. She devotes her whole life for the welfare of her family and in her last days the family members are not going to take care of her. What a pitiable condition! For Kolhatis' a woman is only for earning money and at once she stopped earning they throw her into storehouse. Kishore felt very sad and observing such a heart-breaking and pathetic condition of woman he was haunted with questions like "Has a woman no right to her own life? Is the only aim of our lives to provide a livelihood to our fathers and brothers? Is it sin to be born a beautiful woman in a Kolhati family?'(p. 19)

Whether it be Jiji, once the lady of the house and now a pauper; or Shantabai, the steady and loyal wife; or Susheela Maushi, the fate of all Kolhati tamasha girls is the same – they all have to expiate their 'sin of being a woman'. It is sorrowful but through Kale's autobiography Nietzsche's statement comes true that 'woman is the source of all folly and unreason, the siren figure that lures the male philosopher out of his appointed truth-seeking path and that woman is God's second mistake.'(p. 76)

Born to a tamasha dancer and unknown identity of father, Kishore was oppressed, exploited and maltreated on each and every level. For accommodation in Ambajogai, Kishore has to hide his caste and his identity of a Kolhati. Kishore straightforwardly reveals the factual condition of his oppression to his aunt Rambha maushi and also asked her to not to meet him again. She was surprised on Kishore's treatment and angrily she scolded Kishore: "Before a tamsha dancer knows why her chest must be covered by pallu, somebody has filled her breast with milk under the guise of Chira. Isn't that an insult? For two rupees we are expected to sit on a man's lap- isn't that an insult?

Govt. TCL P.G. College Janjgir(C.G.)

Scanned with CamScanner

Don't forget the few rupees we get for allowing a man to hold and press our hand is what pays for food in our house. Only a rare one like you gets educated and even you feel ashamed of us. Isn't that an insult for us? (p. 152).

She also condemned the dual stands of the society and said, 'Kolhati women only dance. Dancing is our business, and our art. But, these days all kinds of women indulge in blatant prostitution under the guise of dancing. If our pallu slips even a few inches off our chest, it causes a commotion. But heroines in movies dance with bodies exposed, with a different hero each time and it is called art. They go to Delhi and win awards for it. It is all a joke played on us by shameless people.' (p. 152)

And again addressing to Kishore she burst her anger towards the society, 'Do you think we chose to be dancers? Do you think we enjoy coming here and dancing all night before kinds of men? Do we wish to be insulted by your kind of people? People who are educated and do not understand the compulsions of our life?' (p.152)

These sharp and introspecting words of Rambha mushi depicted the anger against age-old cruelties, maltreatment and exploitation forced on Kolhati women and also their cry for marginality and being hatred by their own children and family members. These high class men come to the tamsaha at night and spend their whole night there and when the lady conceives, they don't entertain her. Neither they abandon her nor do they accept their child. Kolhatis are touchable at night but during day they are untouchables. This is the very pathetic, tragic and pitiable condition of our ironically called high class society of which Arvind Adiga rightly describes in his "The White Tiger" as 'an India of Darkness'.

References

1. Adiga, Arvind. 2008. The White Tiger. New York: Free Press.
2. Kale, Kishore Shantabai. 2000. Kolhatyache Por. Translated as 'Against All Odds' by Sandhya Pandey. New Delhi: Penguin Books. (Subsequence references to this edition with page numbers are given in parenthesis).
3. Krishnaswamy, N. 2003. Literary Theory: A Studer New Delhi: Macmillan India

Govt. TCL P.G. College Janjgir(C.G.)

Scanned with CamScanner